Eklavya Annual Report 2007-8

Appendix 29

पाठयचर्या, पाठयक्रम तथा पाठयपुस्तक विकास कार्यशाला, पटना ,बिहार

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि पिछले कई महीनो से राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद पटना बिहार में पाठयचर्या निर्माण, पाठयक्रम और पाठयपुस्तक विकास आधारित कार्यशालाएं और बैठके हो रही है। एकलव्य,विघा भवन और दिगंतर जैसी बडी संस्थाएं एक साथ मिलकर बिहार राज्य के इस बडे काम में अकादमिक सहयोग दे रहे हैं। आई सी आई सी आई के महत्वपूर्ण वित्तिय सहयोग के साथ ही उनके सोशल इनीशिएटिव ग्रुप के सदस्य भी इस प्रयास में लगातार सहभागी हैं। इस श्रंखला की दो कार्यशालाओं में शामिल होने का मौका मुझे मिला है। अपने अनुभवों और काम की दिशा तथा प्रगति पर संक्षिप्त विवरण के साथ ही कुछ सुझाव भी रखने का प्रयास कर रहा हूँ।

राष्ट्रीय पाठयचर्या रूपरेखा तथा बिहार पाठयचर्या रूपरेखा पर कार्यशाला

दिनांकः 17 से 20 दिसंबर 2007

स्थानः एस सी ई आर टी सभागार,पटना, बिहार

प्रमुख स्रोत व्यक्तिः सी एन सुब्रहमण्यम

इस कार्यशाला में स्रोत दल सदस्यों ,साधन सेवियों आदि का प्रशिक्षण हुआ । ये सदस्य ही जिलों की कार्यशालाओं में स्रोत व्यक्ति या साधन सेवी बनकर जाएगें । अतः बिहार पाठयचर्या ,राष्ट्रीय पाठयचर्या , सीखने सिखाने के ज्यादा कारगर तरीके ,कुछ रोचक गतिविधियां , पाठयचर्या ,पाठयपुस्तक और पाठयक्रम आधारित चर्चाओं के माध्यम से समझ बनाने का प्रयास किया गया। साथ ही जिलों की कार्यशालाओं के लिए कार्ययोजना भी तैयार की गई।

चर्चा के दौरान उभरे मुख्य बिन्दुः

• तीन से पांच साल के बच्चे भाषा सीख कर आते हैं। व्याकरण में गलती नही करते हैं। यह सब

उन्होने कैसे सीखा ?

• स्कूल आने से पहले बच्चे बहुत सारी चीजें जल्दी ही सीख लेते हैं जबकि स्कूल आने पर

सीखने की यह गति धीमी हो जाती है।स्कूली शिक्षा में कुछ ऐसे तत्व मौजूद नही हैं जो उसे

सीखने में मदद करें ।

• बच्चें बोलने से पहले इतनी सारी अलग अलग तरह की आवाजें और आहटें पकडते हैं। वे

हजारों आहटों में से अपनी मां की आहट पकड लेते हैं। वे तरह तरह की आवाजें निकालने की

कोशिश करते हैं। बोलने से पहले अपने वोहकल कॉर्ड पर नियंत्रण पाने का प्रयास करते रहते

हैं।

• परिवार के लोग बच्चे की गलतियों का मजा लेते हैं। गलतियों को सीखने की प्रक्रिया में एक

सीढी के रूप में देखना चाहिए।

• मनुष्य का दिमाग सृजनशील है उसमे ंजितनी चीजें डालो उससे कई गुना वह सृजित कर लेता

है।

चर्चा तथा गतिविधियों के विषय :

– कथनो की सत्यता की जांच

– कब कहेगें की बच्चे को पढना आ गया

– पाठयचर्या और पाठयक्रम

– गणित प्रश्न पत्र हल करना

– मैथ्सी , विशेष गुण वाली संख्याएं काटना

– क्लोज टेस्ट , खाली स्थान में शब्द भरना

जिलों की कार्यशाला के लिए कार्ययोजना बनाना

बिहार के सभी जिलों में अगले कुछ सप्ताह के दौरान इस तरह की कार्यशाला आयोजित की जाएगी। इन कार्यशालाओं के माघ्यम से पाठयचर्या ,पाठयक्रम ,पाठयपुस्तक और नवाचारी शिक्षा से जुडे विचारों को प्रत्येक जिले

के शिक्षकों के बीच ले जाने का प्रयास किया जाएगा। इन कार्यशालाओं के लिए कुछ मुख्य बिन्दु तय किए गए।

• पाठयचर्या ,पाठयक्रम और पाठयपुस्तक निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षकों की सक्रिय भूमिका हो।

• शिक्षा के बदलते दृष्टिकोण और मापदण्डों से शिक्षकों को अवगत कराना ।

• बिहार पाठयचर्या पर शिक्षकों की राय लेना ।

• पाठयचर्या और पाठयक्रम में अंतर स्पष्ट करना ।

• शिक्षक भी अपने विचार लेकर आते हैं। उनसे संपर्क संवाद कायम करना ।

• हर शिक्षक को बोलने और अपने विचार रखने के मौके हों ।

• ऐसे शिक्षकों की पहचान करना जो काम और विचारों को आगे ले जाने में मदद कर सकें ।

यह भी तय किया गया कि जिले की कार्यशालाओं में आने वाले शिक्षकों को कुछ पठन सामग्री भी दी जाए । जैसेः–

– सीखना और ज्ञान का सरल अनुवाद

– बिहार शिक्षा पाठयचर्या के पाठ 1, 6 और 9

– बच्चों की भाषा सीखने की छमता

– इतिहास क्यों और कैसे बनता है।

मो उमर

एकलव्य होशंगाबाद

बिहार शिक्षा परियोजना बाँका

चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला

दिनांक 3 जनवरी से 6 जनवरी 2008 तक

उद्देश्य :– पाठयचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक विकास

क्र.	शिक्षक का नाम	विद्यालय	प्रखण्ड
1	नरेन्द्र कुमार सिंह	रा.म.वि.	चान्दन

		गौराबाजार	
2	रतन कुमार	प्रा.वि.पटना	
3	महेश प्रसाद शर्मा	आ.म..वि. चान्दन	
4	पिताम्बर झा	आ.म.वि. चान्दन	
5	रामप्रवेश नारायण राय	मा.वि. निमिया अम्हारा	बैसपूर
6	दीपक कुमार अमर	प्रा.वि.निशानपुर	
7	रविरंजन कुमार सिंह	प्रा.वि. गोवाचक	
8	गोपालकृष्ण कुमार	मा.वि. दर्शनियां	
9	शत्रुन्जय झा	प्रा.वि. रिकोली	बाराझर
10	उमाकान्त कुमार	बी.आर.सी. बाराझर	
11	अनिल मांझी	रा.म.वि. सबकपुर	
12	मो. एहताशमूल हक	प्रा.वि.विरनियां	धौरैया

13	श्री नरेन्द्र कुमार	प्रा.वि. जसमतपुर	
14	सुनील प्रसाद यादव	म.वि. निशानपुर	
15	बरूण कुमार चौधरी	प्रा.वि. विरनियां	
16	महेन्द्र राम	प्रा.वि. चक्काडीह	बॉका
17	ब्रजमोहन मंडल	म.वि.चुटिया	
18	जयजयरामसिंह	प्रा.वि.जमुआ	
19	मो0 शहनाज अंसारी	म.वि.तेसिया	
20	जयकिसन पंडित	प्रो. म.वि. वगडुम्बा	बौसी
21	अमरेन्द्र कुमार	उत्क. म.वि. झपनियां	
22	दिलिप कुमार	प्रा.वि. मीसा	
23	कुन्दन कुमार	प्रा.वि. कानीकेथ	
24	मनन कुमार सिंह	प्रा.वि.	शंभुगंज

		लालमणिचक	
25	अधिकलाल सिंह	म.वि. वंशीपुर	
26	विभाष चन्द्र सिंह	प्रा.वि. चटमाडीह	
27	नरेश प्रसाद ठाकुर	म.वि. मोचनागा	कटोरिया
28	नशीरूल होदा	म.वि. राधानगर	
29	सज्जन कुमार	नव. प्रा.वि. गोखाकुरा	
30	अभय कुमार पंडित	प्रा.वि. छाताकुरूम	
31	अम्बेश कुमार	प्रा.वि.डुगरिया	अमरपुर
32	अवधेश पाठक	म.वि.अमरपुर वाणक	
33	गुलाब राय	कन्या म.वि. अमरपुर	
34	धनंजय कापरी	प्रा.वि. नकसोसा	

35	दीक्षित कुमार	प्रा.वि. नवरोणिया	रजौन
36	दिनेश कुमार सिंह	प्रा.वि. पहाड़पुर बाका	चान्दन
37	बालमुकुन्द कापरी	प्रा.वि. मिर्जापुर	रजौन
38	यासगीन बानो	मा.वि. धौनी	
39	शिवशंकर प्रसाद सिंह	म.वि. शंभूगंज	शंभूगंज
40	निलेश मालवीय	एकलव्य भोपाल	भोपाल
41	तेजनारायण प्रसाद	एस.सी.ई..आर.टी.	पटना

प्रशिक्षण में प्रखण्ड चान्दन, बेसहर, वाराहार, घौरैया, बाँका, बॉसी, शंभूगंज, कटोरिया, अमरपुर, रजौन, से 38 शिक्षक एवं 1 शिक्षिका ने भाग लिया। जिसमें एक एकलव्य से एवं एक व्यक्ति एस.सी.ई.आर.टी. से साधन सेवी के रूप में थे।

प्रथम दिन

- परिचय :– सभी लोगों ने अपना नाम एवं अपने बचपन की एक घटना सुनाई। इसके बाद वर्तमान के अनुभव भी बताए – जिसमें पहले के समय में किताब पढ़ना, अक्षर बोध सीखना, जोड़ जोड़कर सीखना, संयुक्त अक्षर सीखना, क्लिस्ट था। लेकिन अब बच्चों को शब्दों से सीखाया जाता है। पहले शब्द फिर अक्षर जो कि सरल है।
- बच्चों से कभी उकताना नही चाहिए। छड़ी का प्रयोग न करें समझाना चाहिए उन्हें मारना नहीं चाहिए।
- एक बार मैंने एक बच्चे पर बहुत गुस्सा किया बाद में पता चला कि वह गूंगा है इसलिए पहले परिचय लेना चाहिए इससे जानकारी हो जाती है।
- शिक्षा का प्रयोग मित्र के साथ किया, उसको मैने उनका शिक्षा के बारे में सोचा वह ग्रेजुएट कर लिया। इसके बाद सुविधाहीन बच्चों के लिए एक स्कूल खोला काफी बच्चे आने लगे। बच्चों को भय से हम कोई चीज (शिक्षा) नही दे सकेंगे।

- पढ़ाने से पहले बच्चों से बातचीत किया जो वह जानता था उसी से आगे बढ़ा इससे समझ विकसित हुई।
- शिक्षण का अनुभव नही था बच्चे समझते नहीं थे उजाला प्रशिक्षण प्राप्त किया तो शिक्षण ठीक होने लगा।
- छड़ी का प्रयोग टी.एल.एम के रूप में किया।
- खेल के द्वारा बच्चों को आकर्षित किया।
- कमजोर बच्चों पर ध्यान देना होगा।
- बच्चों की संख्या बढ़ाना था बच्चों को जुटाना घर घर जाकर समुदाय से रिश्ता बनाया। इसके बाद बच्चों से अच्छा सम्बन्ध बनाया। बच्चों के रूचि अनुसार खेल सीखना। बच्चों की संख्या बढती गई। पहले 5 फिर 10 अभी 70 बच्चे आ रहे है। ममत्व से प्रेम , प्रेम से ममत्व
- जो बच्चे किताब नहीं पकड़ पा रहे थे। उनके साथ समूह बनाकर काम किया।
- बच्चों के मन को जानना और उसके अनुरूप काम करना।

- एक मोटर सायकल खरीदा था एक नटखट छात्र मेरी मोटर सायकल से छेड़खानी करता था। उसको समझा एवं प्यार से उसे समझाया वह मान गया आज वह इंजीनियर है।
- एक गरीब घर का बच्चा बकरी चरा रहा था उसे वर्ण सीखाना।
- नहीं जानना लज्जा नहीं , सीखने की उत्सुक्ता होनी चाहिए अच्छे लड़कों की संगति सीखने की कोशिश की।
- हम गरीब छात्र थे एक शिक्षक के संरक्षण में संस्कृत स्कूल में नामांकन लिया किसी के सानिध्य में सीखा , पढ़ा और जीवन निर्माण होता है।
- एक अच्छे शिक्षक को जनप्रिय होना चाहिए।
- अपनी क्षमता के अनुसार पढ़ाया लेकिन दूसरे दिन बच्चों की क्षमता को जानना जरूरी समझा।
- हमने एक बार पोस्ट मेन से पूछा कि हमारी चिटठी विटठी आया क्या हमे लिंग का ज्ञान नही था। लेकिन उसी पोस्ट

मेन से एक छोटी सी लड़की ने पूछा मेरी चिटठी आई क्या? हमें बच्चों से भी सीखने को मिलता है।

- नटखट विद्यार्थी पर विशेष ध्यान दिया वह आज सिपाही के पद पर कार्यरत है।
- आज के मध्यान्ह भोजन से शिक्षक की प्रतिष्ठा में कमी आई है।

<u>सत्र दूसरा</u>

<u>विज्ञान के प्रयोग</u>

(1) पहला प्रयोग पानी से भरी बाल्टी में एक शीशे के सूखे ग्लास में सुखा कागज डालकर ग्लास को उलटकर पानी में डुबाया गया। पुनः ग्लास को ऊपर लाकर देख गया कि ग्लास में रखा कागज सूखा है। इस प्रयोग द्वारा यह सावित होता है कि हवा दबाव डालती है।

(2) दूसरा प्रयोग पानी से भरी प्लेट के बीच मोमबत्ती को जलाकर रखा गया। मोमबत्ती कुछ देर जलकर बुझ जाती है। मोमबत्ती बुझते ही पानी

गिलास के अंदर आ जाता है। लोगों ने निष्कर्ष बतौर बताया कि जितनी आक्सीजन गिलास के अंदर थी उतनी देर मोमबत्ती जली और बुझ गई यानी पानी जो चढ़ा वह उतनी आक्सीजन के बराबर ही चढ़ा।

इसी प्रयोग को तीन मोमबत्ती जलाकर किया सभी लोगों का मानना था कि एक मोमबत्ती में जितना पानी उतना ही पानी इस तीन मोमबत्ती के जलाने पर भी चढ़ेगा।

लेकिन इसमें पहले की अपेक्षा डबल पानी चढ़ा।

तो अब क्या आक्सीजन की मात्रा बढ़ गई क्या?। लोग सोचने लगे निष्कर्ष कुछ नहीं बताया गया और कहा गया कि अब ऐसा प्रयोग करों जिसमें यह पता चल सके कि आक्सीजन कितनी जली। या कुछ और कारण है जिसके कारण पानी चढ़ता है आप सभी लोग सोचे।

इसके बाद प्रयोग बंद कर दिया गया।

<u>सत्र तीन :–</u>

सभी शिक्षकों को 8 समूह में बांटा गया प्रत्येक टोली में 5 शिक्षक उपलब्ध थे। सभी टोली को टास्क दिया गया कि '' चार साल का बच्चा भाषा के इस्तेमाल में क्या–क्या जानता है और वह भाषा कैसे सीख जाता है।''

प्रत्येक टोली में चर्चा हुई और रिकार्ड शीट पर नोट किया गया इसके बाद सभी ने प्रस्तुत किया।

जिसमें यह निकलकर आया कि

- एक चार साल का बच्चा मातृभाषा जानता है।
- क्रियाएं करना जानता है। संप्रेषण जानता है।
- रिश्ते जानता है।
- परिवेश की चीज़ों के बारे में जानता है।
- प्राकृतिक चीजो के बारे में जानता है।
- सुनना की प्रकृति होती है।
- वस्तुओं की उपयोगिता समझता है।
- स्वादों को पहचानता है।
- हंसना, नाचना, रूठना जानता है।

- वस्तुओं के नाम जानता है।

कैसे सीख जाता है ?

- सुनकर सीख जाता है।
- अनुकरणशील होते है।
- देखकर सीखता है।
- अभ्यास एवं प्रयास से सीखता है।
- नकल करने की कोशिश करता है।
- प्रयोग करता है।
- सहयोग की भावना से सीखता है।
- प्रश्न पूछकर सीखता है।
- अनुभव द्वारा सीखता है।
- छूकर सीखता है।
- जिज्ञासा द्वारा सीखता है।

यही सभी परिस्थितियां बच्चों को सीखने में मद्दगार है।

सारांश बतौर यह बताया गया कि सभी बच्चों में कुदरती ताकत होती है उसकी जिज्ञासा, सही गलत की ब्रेफिक्री, बार – बार प्रयोग करना। इन्हीं सब के कारण बच्चा सीखता है।

सीखने की प्रक्रिया सहज एवं स्वाभाविक होती है। सीखने की प्रक्रिया जीवन पर्यंत ही चलती रहती है।

एनसीएफ बच्चे सीखते कैसे है पढ़ने को दिया गया।

<u>दूसरा दिन :– 4/1/08</u>

सभी प्रशिक्षणार्थी ने पिछले दिन हुए काम के बारे में अपने अपने विचार प्रस्तुत किये। जिसमें लोगों ने कहा कि केंडल वाला प्रयोग अच्छा लगा। बच्चे कैसे सीखते है? पर चर्चा अच्छी लगी। परिचय में एक दूसरे को पहचाना। नवीन पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक की जानकारी शिक्षण शिक्षक के लिए लाभकारी। बच्चों को प्रयोग द्वारा भी सिखाया जा सकता है। अध्यापन का तरीका वैज्ञानिक हो। जिसे प्रेक्षण, अवलोकन, सत्यता तक पहुचना हो।

प्रयोग बच्चों के लिए आनंदायी और रोचक है। प्रशिक्षण कार्यक्रम रोचक था। कार्यक्रम सत्त चलाया जाए जिससे शिक्षा में गुणवत्ता आए। जीवन के अनुभव से समेकित प्रेरणा मिली। वैज्ञानिक तथ्यों का सत्यापन प्रयोग द्वारा होता है। प्रयोग द्वारा वैज्ञानिक अभिरूचि का वकिास बच्चों में किया जा सकता है। मोमबत्ती वाला प्रयोग जिज्ञासा एवं उत्साहवर्धक था।

सभी प्रशिक्षणार्थी इस बात से सहमत थे कि इस प्रकार की कार्यशालाओ से शिक्षण पद्धति में गुणात्मक सुधार होता है और शिक्षक–छात्र को बेहतर ढंग से समझने का प्रयास करते है।

इसके बाद पुनः 8 टीम अपनी अपनी टोली में बैठी और उन्हें टास्क दिया गया कि

समूह 1, 2 – को भाषा और बोली में क्या अंतर है? इस पर चर्चा करने को कहा गया।

समूह 3, 4 – को 'र' के विभिन्न प्रयोग एवं नियम बनाने को कहा गया।

समूह 5, 6 – को ' ं ' (बिन्दी) संबंधी प्रयोग पर चर्चा कर नियम बनाने को कहा गया।

समूह 7, 8 – को कब कहेंगे कि बच्चे को पढ़ना आ गया इस पर चर्चा करने को कहा गया।

समूह में चर्चा एवं समूह वार प्रस्तुतिकरण किया गया।

<u>भाषा और बोली पर चर्चा</u> – एक टीम ने प्रस्तुत किया कि हम जो बोलते है वह बोली होती है। भाषा मानक होती है । भाषा का व्याकरण होता है। बोली का व्याकरण नहीं होता है।

तब हमारे द्वारा एक वाक्य लिखा गया कि हिन्दी में –

राम आम खाता है।

सीता आम खाती है।

इन दोनों वाक्यों को अंगिका में कैसे लिखते है –

राम आम खाय छै।

सीता आम खाय छै।

इस पर चर्चा हुई कि कैसे बोली का व्याकरण नहीं होता है।

क्योंकि हिन्दी में यदि राम, संज्ञा है और पुल्लिंग है तो क्रिया भी पुल्लिंग ही होती है।

यदि सीता,(कर्ता) स्त्रीलिंग है तो क्रिया भी स्त्रीलिंग ही होगी।

लेकिन अंगिका में कर्ता स्त्रीलिंग हो या पुल्लिंग क्रिया दोनों में एक ही उपयोग होगी। यह नियम निकलता है कि नहीं? दूसरा आप कभी खाय छै आम राम नहीं बोलते ? इसलिए बोली का व्याकरण भी होता है। यह कह सकते है।

कौनसी भाषा कब सभी लोग बोलेगे यह एक सत्ता का मामला है न कि हमारा और तुम्हारा इसलिए भाषा और बोली दो अलग–अलग नहीं होती दोनों एक ही है। दोनों का व्याकरण है। दोनों की वाक्य सरंचना अपनी–अपनी है। अंगिका में भी आपने क्रिया बीच में नहीं बोली यानी आपने नही कहा कि राम खाता है आम।

<u>' र ' का उपयोग –</u> इस पर एक टीम ने प्रस्तुत किया – उन्होंने एक शीट पर 'र' के विभिन्न उपयोग में होने वाले शब्दों को लिखा – जैसे

क्रम, क्रय, ग्राम,

कर्म, नर्म, गर्म

एक नियम बतौर समझाया कि क्रम में क के साथ र का उपयोग हो रहा है इसलिए वह क के पैर में आता है। लेकिन नर्म में र का उपयोग म के साथ हो रहा है इसलिए वह र में अ का लोप हो रहा है इसलिए वह रेफ बनता है। और ऊपर लगता है।

जैसे – G*__ra__*m, Na*__r__*m

<u>बिन्दी (अनुस्वार) का उपयोग</u> – एक टीम ने प्रस्तुत किया उन्होंने विभिन्न संबंध लिखे जैसे –

गंगा, पंचांग, संबंध, चंपक

इस तरह इन्हीं शब्दों को बिन्दी हटाकर लिखा

गङ्.गा, पञ्चाङ्.ग , सम्बन्ध, चम्पक

इसके बाद उन्होने बताया कि अनुस्वार पंचम वर्ण के बदले लगाए जाते है। जिस व्यंजन पर अनुस्वार लगा होगा उसके अगला व्यंजन जिस वर्ग से होगा उस वर्ग का पाचवा वर्ण ही अनुस्वार हटाकर लिखा जावेगा।

इसके बाद इस सभी लोगो ने अनुस्वार वाले कई सारे शब्द लिखे और उन्हें अनुस्वार हटाकर भी लिखा।

लेकिन संयम में अनुस्वार नहीं हटाया क्योंकि इसका पंचम वर्ण नहीं होता है। इसलिए इन्हें अनुस्वार के साथ ही लिखा जायेगा। ऐसा बताया।

इसके बाद इस समूह को रमाकान्त जी का लेख बच्चे की भाषा सीखने की क्षमता पढ़ने को दिया गया। और देखे कि क्या आपने जो नियम बनाया है वही है या कुछ और

कब कहेंगे कि बच्चे को पढ़ना आ गया – इस पर एक टीम ने प्रस्तुत किया और उन्होनें लिखा था कि शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना आना चाहिए और लिखते भी आना चाहिए। इस तरह करीबन 10 वाक्य लिखे थे। सारांश बतौर यह निकला कि पढ़ने का मतलब है कि पाठक जो भी पढ़े उसे यह पता होना चाहिए कि वह क्या पढ़ रहा है। और उसे उसका मतलब भी समझ आना चाहिए। तभी हम कहेंगे कि इसे पढ़ना आता है। यदि वह अक्षर देखकर केवल बोलता है और पूछने पर उसका अर्थ नहीं बता पता है तो वह केवल उच्चारण कर रहा है उसका मतलब नहीं जानता। इसे पढ़ना नहीं

मानना चाहिए। जैसे कप लिखा है और क प पढ़ रहा है या कलम पतंग पढ़रहा है। ऐसा पढ़ना क्या कोई सार्थक है। सभी ने कहा नहीं।

पढ़ने के साथ साथ अर्थ समझ आना चाहिए और उसके दिमाग में उससे संबंधित नए नए विचारों को उत्पन्न होना चाहिए।

इसके बाद सभी को एनसीएफ के अध्याय दिए गए :– और कहा गया कि मुख्य बातें क्या कही गई है। इसे आप सारांश बतौर प्रस्तुत करें। और ऐसे कौन से बिन्दु है जिससे आप सहमत नहीं है उन्हें भी लिखे ताकि हम लोग उस पर चर्चा कर सके ?

<u>इसके बाद लंच</u>

स्कूल में सीखने की प्रकिया, विद्यालय का योगदान, सीखने में भय का स्थान आदि की समूह में चर्चा की गई और फिर प्रस्तुतिकरण किया गया। इसके बाद चर्चा की गई, सदन द्वारा स्पष्ट किया गया कि सीखने की प्रकिया में

प्रेम, भय मुक्त वातावरण बाल केन्द्रित शिक्षा का समावेश आवश्यक है, उम्र के अनुसार शारीरिक विकास स्वास्थ्य तथा सीखने के बीच रिश्ता की चर्चा की गई। किशोर उम्र के बच्चों की शिक्षा उनके खास जरूरते कक्षा में ज्ञान का निर्माण आदि वृहत चर्चा की गई। विद्यालय में बच्चों को ज्ञान का सृजन करने के विभिन्न उपायों की चर्चा की गई तथा स्पष्ट किया गया। इसके बाद सभी टीमों ने अपना अपना प्रस्तुत किया सारांश बताया और मुख्य बातों को बताया।

जैसे – बच्चे सीखते है – सीखने में भय का स्थान क्या है ? इस तरह लगभग 6 बिन्दु पर चर्चा हुई।

05/01/08

फीड बैक – पाठ्य चर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक की जानकारी मिल चुकी है।। पाठ्यचर्या क्या होता है, की जानकारी मिली। अनुस्वार का महत्वपूर्ण जानकारी मिली। सीखने में भय का स्थान नहीं होना चाहिए। भय को हिंसा की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए काफी सराहनीय रहा। किसी विषय को स्पष्ट

करने के लिए आपके द्वारा किया गया तरीका सुझाव आया। विभिन्न विषयों पर वाद–विवाद रूचिकर रहा। सीख मिला। कल का प्रशिक्षण प्रेरणादायक भय एवं अनुशासन। अनुशासन ऐसा बच्चों में भय नहीं रहे। किशोरावस्था की परेशानियों को समझा। अनुस्वार का उपयोग सराहनीय रहा। बच्चे भी आपसी सहभागिता विषय–वस्तु समझ सकते है। किशोरावस्था एवं स्वास्थ्य पाठन पाठन में सामग्री की जरूरत है बच्चों के प्रति शिक्षक का संबंध दोस्ताना होना चाहिए। आन्न्दायी माहौल होना चाहिए। नयी सीख मिलती है। विद्यालय के व्यवस्था के लिए भय अनुशासन के लिए होता है। बालकेन्द्रित शिक्षा गतिविधि द्वारा रूचिकर रहा। बच्चें अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करते है। गतिविधि से प्रत्येक बच्चों पर नजर रखी जा सकती है।

इसके बाद गणित का पर्चा सभी को दिया गया और जो लोगों ने हल किया उसमें पहले तीन सवालें पर चर्चा हुई

1/3 और 1/5 में कौन बड़ा है और क्यों?

सभी ने लिखा 1/3 क्योंकि एक वस्तु के तीन हिस्से किये और उसमें से एक हिस्सा लिया।

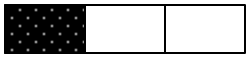

इस तरह से बोर्ड पर चित्र द्वारा भी दिखाया गया।

प्र.2. बढ़ते क्रम में रखे 1/6, 1/2, 1/4, 2/3, 3/4, 13/11, 12/19

हमने कहा कि यह सवाल भी सभी से बन ही जायेगा

लेकिन शिक्षकों की मांग थी कि इसे भी समझाया जाए। पुनः एक शिक्षक आए और उन्होंने बताया। कि 1 में 6 का भाग दिया = 0.16

1 में 2 का भाग दिया = 0.5

1 में 4 का भाग = 0.25

इसके बाद

3 में 4 का भाग दिया = 0.75

इसके बाद

13 में 11 का भाग दिया = 1.18

इसके बाद

12 में 19 का भाग दिया = 0.63

इसके बाद 1/6, 1/4, 1/2, 12/19, 3/4, 13/11 को जमाकर दिखाया।

प्रश्न –3 में 7/2 को चित्र द्वारा कैसे दिखाएंगे?

इस सवाल में कई तरह के जवाब आए

जैसे

(गलत)

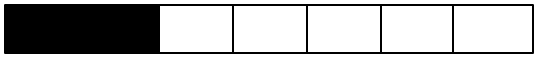

(सही)

इस तरह तीनों सवालों पर विस्तृत चर्चा की गई। इसके बाद इसे रोका गया।

<u>मैथ्सी</u>

इसके बाद गणित की मैथ्सी का खेल खिलवाया गया

इसमें लोगों ने कहा कि इस खेल से बच्चों में कौन कौन सी अवधारणा के प्रति उनकी समझ है यह दिखाई देती है।

- जोड़,
- घटाना।

- सम
- विषम
- रूढ़
- अभाज्य
- गुणज
- छोटा – बड़ा

इसके बाद हिन्दी क्लोज टेस्ट जो पिछले दिन करवाया गया था उसके उत्तर लोगों ने जो लिखा था उसे ब्लैक बोर्ड पर रेकार्ड किया गया। इसमें उत्तर नं .1 में कई तरह के जबाव आए। कौन सा शब्द किसके कितने क्लोज है। कौन से उत्तर सभी ने एक ही लिखे है। इस क्लोज टेस्ट से करवाने का आशय था कि लोगा भाषा संदर्भ में सीखते है। इसकी खास बात है कि इसमें पहली दो लाईन और अंतिम एक लाईन पूरी की पूरी लिखी है और हर सातवा शब्द खाली छोड़ा गया है। इस सातवे घर में आप देखेंगे कि संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण सभी कुछ आ जाता है।

इसके बाद एक अच्छी कक्षा कैसी हो एवं अच्छी पाठ्यपुस्तक कैसी हो इस पर चर्चा कर चार्ट शीट पर लिखा गया।

'अच्छी कक्षा कैसी हो' में लोगों ने लिखा कि – कि कक्षा हवादार एवं रोशनी वाली होना चाहिए। बच्चों की रूचि अनुसार काम होना चाहिए। भय मुक्त वातावरण होना चाहिए। प्रत्येक बच्चें की भागीदारी होनी चाहिए।बच्चों की सामग्री के लिए एक कौना होना चाहिए। .....ऐसी कई सारी बातें लिखी।

<u>लंच</u>

इसके बाद तीन बड़े समूह बनाए गए इसके बाद बी.सी.एफ. भाग – 1, भाग –2, भाग 3 बाँटा गया और तीनों समूह ने पढ़ा इसके बाद सारांश प्रस्तुत किया।

इतिहास का पर्चा पढ़ा गया।

दिनांक 6/1/08

चतुर्थ दिन –

सभी को प्रशिक्षण के ऊपर फीडबैक लिखकर देना था।

प्रशिक्षण का तरीका, विज्ञान के प्रयोग सभी को अच्छे लगे। बच्चे बहुत कुछ सीखकर आते है यह कथन में काफी अच्छा रहा।

निलेश मालवीय

एकलव्य शाहपुर

पाठयचर्या ,पाठयक्रम तथा पाठयपुस्तक विकास कार्यशाला, बिहार

दिसंबर 2007 की राज्य स्तरीय कार्यशाला के बाद जनवरी 2008 के पहले सप्ताह तथा अंतिम सप्ताह में बिहार राज्य के सभी जिलों में कार्यशालाएं हुई। एकलव्य से जितेन्द्र तथा नीलेश जनवरी के पहले सप्ताह की कार्यशाला में शामिल थें । जबकि मो उमर और दिनेश पटेल फरवरी के पहले सप्ताह में हुई कार्यशाला में उपस्थित रहें । प्रस्तुत है संक्षिप्त विवरण–

जनवरी 2008 की 29 और 30 तारीख को एस सी ई आर टी पटना में फीडबैक मीटिगं और नई टीम बनाने का काम हुआ । पहले दिन एस सी ई आर टी निदेशक वारिस हसन, विभागाध्यक्ष मोईन जी, के के ठाकुर जी और ज्ञानदेव त्रिपाठी जी उपस्थित थें। पिछली जिला स्तरीय कार्यशालाओं का फीडबैक सत्र हुआ । सभी साधन सेवी शिक्षक ,विघा भवन ,एकलव्य और सोशल इनिशिएटिव ग्रुप, आई सी आई सी आई के सभी साथी उपस्थित थें।

फीड बैक सत्र में उभरे कुछ मुख्य बिन्दुः–

– लोग प्रशासनिक व्यवस्थाओं से खुश नही थे। उनका कहना था कि कार्यशाला की सूचना

जिलों तक समय से नही पहुची थी।

– प्रतिभागी शिक्षकों को बहुत ही कम समय में बुलाया गया था । अतः वे अपनी तैयारी करके

नही आ सके थे।

– जिले में जाकर कुछ महत्वपूर्ण परचों की फोटोकापी करवाना या प्रयोगों के लिए सामग्री

जुटाना काफी मुश्किल होता था।

– अधिकांशतः शिक्षक शिक्षिकाएं राष्ट्रीय पाठचर्या और बिहार पाठचर्या से सहमत होते थें ।

उनकी असहमती कही भी नही होती थी।

– जिलों की कार्यशाला में भी राज्य स्तरीय कार्यशाला की तरह ही महिला प्रतिभागी बहुत ही

कम होती थी।

– सभी शिक्षको को कार्यशाला में नया पन लगा। सभी गतिविधियों में उन्होनें काफी रूचि

दिखाई।

– कुछ जिलों में चारो दिन का सत्र पूरी तरह नही हो पाया था।

– ज्यादातर लोगो का विश्वास था कि आज के समय में अग्रेंजी पढाना ज्यादा फायदेमंद है।

– पाठयचर्या और पाठयक्रम मे अंतर बहुत साफ नही हो पा रहा था ।

– शिक्षक स्थानिय मुददों को पाठयचर्या में डालना चाहते थें।

– लोग नेपाल से जुडी समस्याओं को भी पाठयपुस्तक में डालना चाहते थें ।

– अधिकांश शिक्षक भिन्न दर्शना और पत्थर का क्षेत्रफल निकालने के सवालों को नही हल

कर सके थें।

दिनांक 30.1.08

आज विभिन्न टीमें बनाकर उन्हें बाकी रह गये जिलों मे भेजने की तैयारी की गई। एक सदस्य एकलव्य या विघा भवन से और दूसरा सदस्य एस सी ई आर टी से रखते हुए दो सदस्यों की टीमें बनाई गई। तीन जिलो में सोशल इनिशिएटिव ग्रुप, आई सी आई सी आई के लोग भी कार्यशालाओं में उपस्थित रहें। जिलों के लिए प्रस्थान करने से ठीक पहले पता चला कि कई जिलो मे अभी तक सूचना ही नही पहुच सकी है।

इसी कारण से किशनगंज और पटना सहित कुछ अन्य जिलों में कार्यशाला कुछ दिनो बाद ही शुरू कराई जा सकी । जिन जगहों पर कार्यशालाएं शुरू भी हो सकी तो वहां के शिक्षको को बहुत ही कम समय में कार्यशाला में उपस्थित होना पडा ।

मुझें जमुई जिला की कार्यशाला में शामिल होने का मौका मिला। मेरे साथ एस सी ई आर टी ,बिहार के साधन सेवी जितेन्द्र जी और सोशल

इनिशिएटिव ग्रुप की काजल जी भी चारो दिन उपस्थित रहें । यह कार्यशाला जमुई के बरहट ब्लाक में स्थित बी आर सी भवन में हुई। इसी भवन में लडकियों का कराटे प्रशिक्षण भी चल रहा था अतः हम लोगो को जमुई के एक होटल में ठहराया गया था। प्रत्येक ब्लाक से चार शिक्षक कार्यशाला में बुलाए गए थें ।

दिनांक 31.1.08

स्थानः बी आर सी, बरहट ,जमुई

कुल उपस्थित लोगः 33

महिला प्रतिभागीः 2

सर्वप्रथम सभी लोगों ने मिलकर अभियान गीत गाया, फिर आपसी परिचय हुआ । आपसी बातचीत में शिक्षकों ने बताया कि उन्हें कल शाम को या आज सुबह स्कूल पहुचनें पर बताया गया कि कार्यशाला में जाना है। एक शिक्षक तो इतनी जल्दी में आए थें कि अपना चश्मा लाना ही भूल गए । इसके बाद कार्ययोजना के आधार पर काम शुरू हुआ।

चार साल की बच्ची भाषा या गणित में क्या क्या जानती है ?उसने यह सब कैसे सीखा होगा ?

इस चर्चा में सभी ने अपने विचार रखें । लोगों को आश्चर्य हुआ कि बच्चे इतना सब कुछ कैसे सीख जाते है। वह भी तब जब हम उन्हें औपचारिक रूप से कुछ सिखा नही रहे होते है। अनुकरण और नकल , अपने प्रयासों से सीखना, गलतियां सुधारने के मौके देना आदि विषयों पर काफी चर्चा की गई।

समूह कार्य

प्रतिभागियों को पांच समूहों में बांट दिया गया। प्रत्येक समूह को विषय देकर चार्ट पर लिखने का काम दिया गया । पांच विषय जिनपर समूहों में काम हुआ इस प्रकार थें ।

1 हिन्दी में बहुवचन बनाने के नियम

2 र की कहानी

3 अनुनासिक व अनुस्वार के नियम

4 हिन्दी में चाहिए का प्रयोग

5 कर्ता ,क्रिया में संबंध

प्रत्येक समूह से एक एक व्यक्ति ने आकर अपने समूह के विचारों को चार्ट मे लिखी बातों द्वारा सदन के सामने प्रस्तुत किया । समस्त सदन ने चर्चा तथ सवाल जवाब के द्वारा समझ बनाने का काम किया। शाम को सभी प्रतिभागियों को सीखना व ज्ञान तथा कुछ अन्य पठन सामग्री देकर आज के सत्र का समापन हुआ।

दिनांकः1.2.08

आज शुरूआत कल दिन भर के कामों पर फीडबैक सें हुई । कल बाकी रह गई कुछ बातों पर फिर से गौर करते हुए थोडा समय दिया गया । तीन समूहों के चार्ट में लिखी गई बातों पर विस्तृत चर्चा हुई।

1 र की कहानी

कर्म , भ्रम ,ड्रम जैसे शब्दों में र को अलग अलग तरीकों से दर्शाया गया है। हम बच्चों को इसके प्रयोग का नियम नही पढाते हैं फिर भी कोई बच्चा इन्हें लिखने या बोलने में कोई गलती नही करता है।

2 अनुनासिक व अनुस्वार के लिए नियम

मॉ , पंप ,संत , संसार ,अन्न ,कंचन जैसे शब्दों में आने वाली अनुनासिक और अनुस्वार घ्वनियों और लिखने के लिए व्याकरण के नियमो पर विस्तृत चर्चा तथा बहस हुई।

3 हिन्दी में चाहिए का प्रयोग

मुझे आम चाहिए ,तुम्हे दवा पी लेनी चाहिए , क्या मुझे चले जाना चाहिए । इन सभी वाक्यों में चाहिए का प्रयोग अलग अलग संदर्भों में हो रहा है। इस पर भी चर्चा की गई।

कब कहेंगे कि बच्चों को पढना आ गया।

इस चर्चा में विभिन्न समूहों ने अपने मत रखें :–

– जब बच्चे वर्ण सीखकर शब्द निर्माण कर सकें ।

– जब बच्चे पूरे वाक्य ठीक ठीक पढ रहे हों ।

– शब्दों को शुद्ध रूप से पढ रहे हों ।

– उन्हें शब्दों और वाक्यों का अर्थ भी समझ में आना चाहिए।

– अशुद्धियों पर ध्यान देना सीख जाएं।

– अर्थ जानने पर पढना आसान हो जाता है।

राष्ट्रीय पाठयचर्या रूपरेखा पर चर्चा।

चर्चा के दौरान यह बात सामने आई कि अधिकांश लोग पाठयचर्या के व्यापक अर्थों को नही समझ रहे हैं। वे उसे पाठयपुस्तक या पाठयक्रम के सीमित दायरे में रखकर ही बातें कर रहे हैं। लोगों की बातां से उभरे मुख्य बिन्दु इस प्रकार थेः–

– शैक्षणिक गतिविधियों में की जाने वाली सारी गतिविधियां पाठयचर्या है।

– ऐसा हथियार जिससे पढाने में सुगमता हो।

– सिखाने का क्रमवार तरीका ।

– छात्रों और विधालय का चहुंमुखी विकास।

– शैक्षणिक सत्र की सारी प्रक्रियाएं ।

– सीखने की सारी प्रक्रियाएं पाठयचर्या है।

समूह कार्य

सभी समूहों को अलग अलग बिन्दुओं पर लेखन कार्य करने को भी कहा गया था । जिसके आधार पर सामुहिक चर्चा द्वारा समझ बनाने का प्रयास हुआ।

बच्चे सीखते कैसे हैं

हमारी शिक्षण प्रक्रिया में कुछ न कुछ बंधन है। बच्चे के मानसिक विकास को ध्यान में रखते हुए मुल्यांकन भी करना चाहिए।

अनुशासन की प्रक्रिया में भय का स्थान

हम शिक्षक स्वयं ही अनुशासित नही हैं।

बच्चों में उर्जा है, उन्हें सही दिशा देने की जरूरत है।

भय से बच्चों को पढाया नही जा सकता।

ज्ञान और सूचना में फर्क

जानकारी ही ज्ञान है।

सूचनाओं से मिलकर ही ज्ञान भी बन सकता है।

सूचना ज्ञान का एक हिस्सा तो हो सकती है लेकिन ज्ञान को ज्यादा व्यापक संदर्भ में

देखने की जरूरत है।

दिनांक 2.2.08

आज प्रतिवेदन पढा गया । इसके बाद फीड बैक सत्र हुआ। एक समूह के लोगों ने अपने लेखन कार्य को बहुत ही कठिन हिन्दी में लिखा था। इस पर चर्चा उभरी कि हमें सरल और समझ में आने वाली भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए। बहुभाषिता पर अमल करते हुए हिन्दी, उर्दू , अग्रेंजी और संस्कृत में भी प्रतिवेदन लिखने को कहा गया।

विज्ञान प्रयोग

1 मोमबत्ती बुझने पर पानी क्यों चढा ?

इस प्रयोग को लोगों ने छह समूहों में बैठकर कई कई बार एक और दो मोमबत्तियों से किया। सभी ने लम्बी चर्चा और तर्क वितर्क किया । लोगो ने विभिन्न कारण बताएः—

—ग्लास में निर्वात बन गया था । जगह भरने के लिए पानी चढ गया।

—ग्लास के भीतर की सारी आक्सीजन जल कर कार्बन—डाई—आक्साइड बन गई है।

—ग्लास के भीतर और बाहर के वातावरण के दाब में अंतर है अतः पानी चढ गया।

—पानी के पृष्ठ तनाव के कारण पानी उपर चढ गया।

—पास्कल के सिद्धांत से पानी उपर चढ गया।

2 उंगलियों पर छडी का सरकना

इस प्रयोग को करने से पहले लोगो ने तमाम तरह के अनुमान लगाएं। उंगली पर छडी क्यों रूक रही है इसका उत्तर खोजते हुए गुरूत्व बल , गुरूत्व केन्द्र , भार , द्रव्यमान , घर्षण आदि पर विस्तृत चर्चा हुई। अंततः लोग सही निष्कर्ष पर पहुंच गए।

3 विभिन्न प्रकार की गेंदों को उचाई से गिराना

पांच अलग अलग तरह की गेदों को विभिन्न प्रकार की सतहों पर गिराकर देखा गया कि गेंद कितने टप्पे खाती है और कितना उंचा उछलती है।

स्थितिज बल , गतिज बल , धर्षण बल , क्रिया बल, प्रतिक्रिया बल ,इलास्टिसिटी , गुरूत्वाकर्षण बल आदि पर काफी चर्चा हुई।

एक शिक्षक का कहना था कि हमें इस तरह मजेदार तरीके से पढाया ही नही गया है। अब हम भी अपनी कक्षा में ऐसे तरीकों का इस्तेमाल करेंगे। बच्चों को प्रयोग करने के मौके देना चाहिए तभी वे मनोरंजक तरीके से बेहतर ढंग से सीख सकते हैं।

इतिहास कैसे बनता है

सभी प्रतिभागियों को मोहम्मद बिन तुगलक पर अल बरनी का लिखा हुआ लेख पढने को दिया गया । तुगलक पर राय ली गई तो सदन का बहुमत था कि तुगलक ज्यादा बुरा राजा नही था लेकिन वह किसी से सलाह लिए बगैर काम करता था।

इसके बाद जब सभी को मोहम्मद बिन तुगलक पर एसामी का लिखा लेख पढाया गया तो इसी सदन ने अपनी राय बदल दी । अब सदन का बहुमत था कि मोहम्मद बिन तुगलक एक अत्याचारी राजा था।

लेखकों का पूर्वाग्रह से ग्रसित होने पर लम्बी चर्चा की गई। दोनो लेखों के आधार पर सत्य बातें खोजने का प्रयास हुआ । इतिहास को इस नजरिए से देखना सभी लोगों के लिए एक नया अनुभव था।

जमुई के लोगों का मत है कि भगवान महावीर का जन्म जमुई में ही हुआ था । जबकि इतिहास की कताबें सही जन्म स्थान वैशाली को बताती हैं। लोगों को इस विपय पर आगे भी खोजबीन करते रहने का काम दिया गया ।

मैथ्सी की गतिविधि

लोगों को इस खेल में मजा आया । अभाज्य ,विषम , सम , गुणज आदि पढाने के लिए यह एक रोचक गतिविधि हो सकती है।

गणित का प्रश्नपत्र

सभी लोगो से गणित का प्रश्नपत्र हल कराया गया । कुछ शिक्षक शिक्षिकाएं यह कह कर पर्चा वापिस करने का प्रयास कर रहे थें कि हम गणित भूल चुके हैं। लेकिन प्रोत्साहित करने पर उन्होने भी हल किया।

बिहार पाठयचर्या

सभी लोगो को बिहार शिक्षा पाठयचर्या के पाठ 1, 6 और 9 पढने को दिया गया । विभिन्न बिन्दुओं पर समूह में लेखन कार्य करने को भी कहा गया ।

दिनांकः 3.2.08

आज हिन्दी और उर्दू के प्रतिवेदन पढे गए। कल के काम पर फीड बैक हुआ। आज कार्यशाला का अंतिम दिन है अतः आज काम ज्यादा था और समय कम ।

बिहार पाठयचर्या पर समूहों के काम पर चर्चा

प्रत्येक समूह से लोगों ने बी सी एफ पर अपने लेख पढकर प्रस्तुत किए। कहीं पर असहमति का बिन्दु नही उभरा ।

—कई शिक्षक संस्कार , संस्कृत ,अध्यात्म ,अनुशासन आदि को पाठयक्रम में शामिल करने की

बात कर रहे थें ।

–अंग्रेजी पढने के महत्व पर भी चर्चा उभरी ।

–कई तरह की रोचक गतिविधियां पुस्तकों मे रखने का सुझाव भी आया ।

–पहले तो लोगो ने कहा कि अब जात, पात,छुआछूत खत्म हो चुका है। लेकिन आगे चलकर

उन्होने स्वीकार किया कि अभी तो हमारे भीतर से भी पूरी तरह ये सब चीजें खत्म नही हो

सकी हैं।

–अपने बच्चो को संस्कृत पढाना कोई शिक्षक नही चाहते थें । लेकिन अग्रेंजी पढाना सभी लोग

चाहते थें।

–सदन में उपस्थित लोगों में से मात्र 3–4 शिक्षक ही अपने बच्चों को सरकारी विघालयों में

पढाते हैं। चर्चा उभरी कि ऐसा क्यों है कि सरकारी शिक्षक को भी सरकारी शिक्षकों पर भरोसा

नही रह गया है।

—सब का कहना था कि प्रयोग कराने के लिए प्रयोगशाला नही है। लेकिन कल के सारे प्रयोग

बिना प्रयोगशाला के आसपास उपलब्ध चीजों से ही हो गए यह बात भी उन्होने मानी ।

गणित प्रश्नपत्र पर चर्चा

गणित के सवालों के हल में काफी गलतियां थी । प्रत्येक सवाल पर थोडी देर चर्चा की गई। इन सभी पर लम्बी चर्चा के लिए समय का आभाव था। अतः कुछ हद तक संक्षिप्त चर्चा करके समझ बनाने का प्रयास हुआ ।

सात बटे दो को चित्र बनाकर दिखाना और पत्थर की सतह का क्षेत्रफल निकालना जैसे सवालों पर लम्बी चर्चा और बहस हुई। गणित पर आगे भी काफी काम किए जाने की जरूरत है।

अच्छी पाठयपुस्तक कैसी हो

इस विषय पर बोलते हुए लोगो ने कई तरह के विचार रखें ।

– पुस्तक में व्यक्ति के विकास से जुडी बातें हों ।

– शिक्षा रोजगार प्राप्त करने में सहायक हो ।

पहले कहा जाता था या विधा सा विमुक्तये

आज है या विधा सा नियुक्तये

– पुस्तक बच्चों को आसपास उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करना सिखाए।

– लघु उघेग,मधुमक्खी पालन और चित्रकला आदि के लिए प्रेरित करे।

– ऐसी गतिविधियां हों जिससे समूह चर्चा करने मे मदद मिले

– मजें से की जा सकने वाली गतिविधियां हों। इन गतिविधियों में चुनौती भी हो।

– बच्चों को पर्यावरण से जुडे मसलों पर संवेदनशील बनाए।

– भाषा ,परंपरा और नैतिक विकास हो सके।

कार्यशाला पर प्रतिभागियों की राय

आज अंतिम दिन जिले के तथा ब्लाक के कुछ अधिकारी भी उपस्थित थें । उन्होंने भी अपने विचार रखें । सभी प्रतिभागियों ने कहा कि यह कार्यशाला एक नए तरह की कार्यशाला थी। यहां पर काफी कुछ नया सीखने को मिला है। सबसे ज्यादा तो यह अहसास बना है कि हम शिक्षकों को भी अभी और ज्यादा सीखने की जरूरत है। हमे यह भी महसूस हो रहा है कि हमारी शिक्षा ठीक ढंग से नही हुई है । हम बच्चों को नवाचारी तरीकों से पढाना और स्वयं सीखना चाहते हैं।

मेरा अनुभव

सरकारी शिक्षकों के साथ यह मेरा पहला अनुभव था । अधिकांश शिक्षक मेरे पिता की उम्र के थें। उनके साथ सत्र लेना , तर्क करना और अकादमिक , सामाजिक मसलों पर चर्चा करना एक रोमांचक अनुभव रहा । मेरे स्वयं के आत्मविश्वास को उर्जा प्राप्त हुई है। अब मै समझ सका हूँ कि दो वर्षों तक एकलव्य में रहकर मैने क्या सीखा है और आगे मुझे क्या सीखना है।

कुछ सुझाव

– चुने हुए शिक्षकों का प्रशिक्षण एकलव्य या विघाभवन में रखा जाए ।

– सभी बी आर सी पर स्रोत , संदर्भ , चकमक तथा अन्य शिक्षण सामग्री पहुंचाई जाए।

– राज्य स्तर के स्रोत सदस्यों का एकलव्य तथा विघा भवन के साथ सघन जुडाव की

संभावनाएं तलाशी जाएं।

– प्रशासनिक व्यवस्थाएं , आदेश पत्र ,सूचना आदि जैसे मसलों को गंभीरता से लिया जाए

ताकि अकादमिक काम भी अच्छे से हो सके ।

– पाठयपुस्तक निर्माण ,गणित , सामाजिक अध्ययन ,प्रयोग , गतिविधि आदि विषयों पर

कार्यशालाएं रखी जाएं।

– राष्ट्रीय पाठयचर्या और बिहार पाठयचर्या को प्रत्येक बी आर सी तक पहुंचाया जाए।

– एस सी ई आर टी बिहार को साल में दो पत्रिकाएं निकालना चाहिए जिसमें शिक्षकों के

अनुभवों , विचारों आदि को स्थान दिया जाए।

– कुछ कार्यशालाएं सीधे बच्चों के साथ रखी जाएं ताकि शिक्षक नवाचारी सिद्धांतों के असर को

स्वयं महसूस कर सकें।

– मूल्यांकन के तरीकों और उसमें बदलाव की जरूरत पर एक कार्यशाला रखी जाए ।

मो उमर

एकलव्य, होशंगाबाद

15.2.08